विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

दिवाली भी हो ली!

पूरे साल जिस पर्व का व्याकुलता से इंतज़ार रहता है वह जैसे पलक झपकते ही आता है और अतीत हो जाता है। क्या केवल मुझको ऐसा लगता है, या आपको भी ऐसा ही लगता है? कितने दिनों से हम इस त्योहार की तैयारियों में जुटे रहते हैं! घरों की सफाई करते हैं, अनावश्यक सामान घर से बाहर निकालते हैं और जिसे हम अब ज़रूरी मानने लगे हैं उसे खरीदने की योजनाएं बनाते हैं। लोग नई खरीद के लिए बजट में प्रावधान करते हैं और अब तो हालत यह हो गई है कि बड़ी चीज़ें खरीदने के लिए आपको पहले से ज़्यादा इंतज़ार करना पड़ता है। पहले आप कुछ खरीदते थे तो बेचने वाला उपकृत अनुभव करता था, अब आप खरीदने जाते हैं तो बेचने वाला जैसे आप पर एहसान करता है। ख़ास तौर पर बड़े उपभोक्ता उत्पादों के मामले में ऐसा होने लगा है। आप बड़ा टीवी, बड़ी कार या ऐसी ही कोई चीज़ खरीदना चाहें तो बहुत सम्भावना यही है कि उसके लिए आपको न केवल प्रतीक्षा करनी पड़े, बेचने वाले की चिरौरी भी करनी पड़े, कि वह आपको आपकी इच्छित तिथि को ठीक वही उत्पाद दे दे जो आप लेना चाहते हैं, जैसे किसी ख़ास मॉडल का टीवी या किसी ख़ास रंग और मॉडल की कार। उपभोक्ता राजा है वाली बात अतीत हो चुकी है।

इस बात की मैं शिकायत नहीं कर रहा हूं। समय बदलता है और समय के साथ काफी कुछ बदलता है। जिस काल में मैं बड़ा हो रहा था उस काल में अगर हमें बैंक की किसी सेवा की ज़रूरत होती थी तो बैंक वह सेवा देकर हमें उपकृत करता था। बैंक में खाता खुलवाना, चैक बुक लेना बहुत बड़ी बात होती थी। लॉकर मिल जाना तो जैसे लॉटरी लग जाना था। अब स्थितियां उलट गई हैं। बैंक वाले आपके आगे-पीछे घूमते हैं कि आप खाता खुलवा लें, लॉकर ले लें। यह एक उदाहरण है। ऐसे बहुत सारे बदलाव हम देख रहे हैं।

ये सारे बदलाव हमारे रिश्तों, सामाजिक संबंधों, रीति-रिवाज़ों और त्योहारों के मनाने के तौर-तरीकों में भी नज़र आ रहे हैं। इन्हें मुझ जैसे लोग अधिक लक्ष्य इसलिए कर पाते हैं कि हमने वो ज़माना भी देखा है और यह ज़माना भी देख रहे हैं। देख तो सभी रहे हैं, लेकिन हम जैसों के पास थोड़ा और पीछे की स्मृतियां भी हैं और हम कल और आज की तुलना कर सकते हैं। मैं अपनी बात को केवल बदलावों को बताने तक सीमित रखना चाहता हूं। कोई मूल्य निर्णय करना, किसी एक स्थिति या तरीके को अच्छा और दूसरे को बुरा कहना मुझे ठीक नहीं लगता। मेरी पीढ़ी के बहुत सारे लोग अतीत पर मुग्ध और वर्तमान से स्थायी रूप से क्षुब्ध रहते हैं। उनके हिसाब से कल जो भी था महान था और आज जो भी है वह पतन की पराकाष्ठा है। मेरा सोच ऐसा नहीं है। मैं मानता हूं कि बहुत सारे बदलावों ने हमारे जीवन को बेहतर भी बनाया है। और यह भी कि बहुत सारे बदलाव समय की मांग हैं। उन्हें होना ही था।

दीपावली के संदर्भ में मैंने बाज़ार की स्थिति की चर्चा की। वैसे तो दीपावली का संबंध लक्ष्मी जी से और इसलिए समृद्धि से है, इसलिए उसके संदर्भ में बाज़ार की अनदेखी की ही नहीं जा सकती है, लेकिन मैंने देखा है कि समय के साथ इस त्योहार में बाज़ार की भूमिका बढ़ती गई है। और इस त्योहार में ही क्यों, उसके अतिरिक्त भी। ध्यान दीजिए कि अब साल में कितनी बार ऐसे मुहूर्त आते हैं जब खरीददारी करना शुभ और मंगलकारी होता है। मेरे बचपन और किशोरावस्था में ऐसे मुहूर्त नहीं आते थे। अब जैसे ही कोई त्योहार आता है, मेरे घर आने वाले अख़बारों की पृष्ठ संख्या बढ़ जाती है, और यह कहने की ज़रूरत तो नहीं है, फिर भी कह देता हूं कि ये बढ़े हुए पृष्ठ विज्ञापनों के होते हैं। रंग-बिरंगे और आकर्षक। हमें ललचाते हुए। केवल दिवाली पर ही नहीं, अन्य करीब-करीब सारे पर्वों और त्योहार के अवसरों पर ऐसा ही होता है। बाज़ार खूब सजते हैं, आवाज़ देकर हमें अपने पास बुलाते हैं, और हम भी खुद को रोकते-रोकते उसके पास जाने से बच नहीं पाते हैं।

हमारे अधिकांश त्योहार धर्म के इर्द-गिर्द बने हुए हैं। उन्हें मनाने में भी पहले धर्म और धार्मिक परंपराओं का भाव प्रबल रहता था। अब आए बदलावों की वजह से इसकी जगह वैभव प्रदर्शन और चमक-दमक, चकाचौंध और शोर-शराबे ने ले ली है। धर्म व तत्संबंधी परंपराएं नेपथ्य में चली गई हैं। पारिवारिकता और सामाजिकता के स्थान पर भी औपचारिकता का निर्वाह अधिक होने लगा है।

पहले त्योहारों पर अधिकांश काम हम खुद करते थे, अब अपनी-अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार वे काम दूसरों से करवाते हैं। लगभग ढाई तीन दशक पहले मेरी मां घर में पुताई भी ख़ुद करती थीं, सफाई वगैरह तो करती ही थीं। अब यह काम हम औरों से, पैसे देकर करवाने लगे हैं। पहले त्योहारों पर मिठाई घर में बनाई जाती थी और पूरा परिवार कई दिन इस गृह उद्योग में जुटा रहता था। अब सब कुछ बाज़ार से आता है। इसमें भी फर्क़ आ गया है। मैं अपनी ज़िंदगी के काफी बड़े भाग में बहुत छोटे कस्बों में रहा हूं। त्योहारों पर, ख़ास तौर पर दिवाली पर हम लोग बस में बैठ कर पास के अपेक्षाकृत बड़े कस्बे से मिठाई लाते हैं। अब ऐसा करने के लिए हममें से बहुत सारे लोग स्विगी ज़ोमैटो जैसी डिलीवरी सेवाओं पर निर्भर हो गए हैं। पहले दिवाली पर हम हाथ से शुभ कामना संदेश लिखकर और उन संदेशों पर जैसी-तैसी चित्रकारी करके डाक से भेजते थे, फिर छपवा कर कार्ड भेजने लगे और अब वॉट्सएप और अन्य सोशल मीडिया पर शुभ कामनाओं का आदान-प्रदान हो जाता है। हर्र लगे ना फिटकरी। एक ज़माना था जब त्योहारों पर लोग अपनों के घर जाते थे, तसल्ली से बैठकर गपशप करते, घर में बने पकवान खाते और उनकी सराहना करते। फिर उपहारों के आदान-प्रदान का चलन हुआ, और अब त्योहारों पर अपनों के घर आना-जाना भी जैसे समाप्त ही हो गया है। मोबाइल पर शुभ कामनाओं का आदान-प्रदान हो जाता है। अगर उपहारों का आदान-प्रदान होना है तो उसके लिए भी स्वयं जाना ज़रूरी नहीं रह गया है। बहुत मज़े की बात यह कि मिठाई की दुकानें खूब सजती हैं, मिठाइयों में नवाचार भी बहुत होते हैं, समाचार माध्यमों में उनकी अत्यंत महंगी किस्मों की रस ले लेकर चर्चा होती है, शाम होते-होते मिठाई की दुकानें खाली हो जाती हैं लेकिन लोग मिठाई खाते बहुत कम हैं। वजह यह कि लोग अब अपनी सेहत के प्रति ज़्यादा जागरूक हो गए हैं।

हर त्योहार पर उसकी कुछ परंपराओं को लेकर वाद-विवाद होने लगा है और लोग सीधे-सीधे दो गुटों में बंटकर टकराने लगे हैं। दिवाली पर पटाखों को लेकर, तो होली पर पानी को लेकर, बकरा ईद पर जीव हत्या को लेकर तो नव वर्ष पर उसके विदेशी होने को लेकर विवाद अब इतने आम हो चुके हैं कि ऐसा लगता है जैसे ये विवाद भी त्योहार का ही हिस्सा हैं। ऐसे ज़्यादातर विवाद तार्किक न होकर पूर्वाग्रह और ज़िद से भरे होते हैं और इनका अंत कटुता में होता है। अब यह बात भी समझ में आने लगी है कि इनमें से बहुत सारे विवाद बाकायदा प्रायोजित होते हैं। उदाहरण के लिए देखें कि एक ख़ास समय पर चीन में बनी हुई झालरों का विरोध शुरु होता है। और जब विरोध करने वालों को उसमें फायदा नज़र नहीं आता तो विरोध होता ही नहीं है, जैसे इस बरस नहीं हुआ। ऐसे बहुत सारे प्रसंग याद किए जा सकते हैं। ये विवाद इस बात का भी संकेत देते हैं कि हममें से बहुत सारे लोग अब पहले से ज़्यादा असहिष्णु हो गए हैं। हमें अपनों से ज़्यादा दूसरों की बुराइयां नज़र आती हैं और हम बढ़-चढ़कर उनकी चर्चा करते हैं। जब हमें कोई अपनी किसी कमी की याद दिलाता है तो हम जवाब में दूसरों की कमियां गिनाने लगते हैं या यह सवाल करने लगते हैं कि तुम हमारी बात क्यों कर रहे हो, उन की बात क्यों नहीं कर रहे?

हमारे अधिकांश त्योहार धर्म के इर्द-गिर्द बने हुए हैं। उन्हें मनाने में भी पहले धर्म और धार्मिक परंपराओं का भाव प्रबल रहता था। अब आए बदलावों की वजह से इसकी जगह वैभव प्रदर्शन और चमक-दमक, चकाचौंध और शोर-शराबे ने ले ली है। धर्म व तत्संबंधी परंपराएं नेपथ्य में चली गई हैं। पारिवारिकता और सामाजिकता के स्थान पर भी औपचारिकता का निर्वाह अधिक होने लगा है।

लेकिन जैसा मैंने कहा, ये सारे परिवर्तन कुछ तो समय और स्थितियों की वजह से हो रहे हैं और कुछ हमारी मानसिकता में आए बदलावों के कारण हो रहे हैं। इन सबके बावजूद त्योहार हमारे लिए अपरिहार्य हैं। वे हमारी ज़िंदगी की एकरसता को तोड़ते हैं और बदले वक्त में जितनी भी गुंजाइश बची हुई है उतनी सामाजिकता का पोषण करते हैं।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

जो दूण राखे निज धर्म को तेहि राखे करतार -बटेंगे तो कटेंगे- जुमले का पर्याय

प्रो. वीर बहादुर सिंह

वाक्य प्राचीन होते हुए भी सार्वभौमिक है। इस शीर्षक का पहला भाग आगरा के जिस महाविद्यालय में मैंने शिक्षा प्राप्त की, उसके मुख्य भवन पर लिखा है। वर्तमान परिपेक्ष में राजनीतिक हल्कों में विशेष रूप से उत्तरप्रदेश में उपरोक्त जुमला काफी प्रयुक्त हो रहा है, परिपेक्ष चुनाव हो सकता है अथवा हिन्दू मुसलमान कनफ्लिक्ट अथवा संघर्ष। ये संघर्ष छोटे-मोटे, यदा-कदा और लोकल पॉकेट्स से लेकर व्यापक स्तर तक के हो सकते हैं। व्यापकता और पुनरावृति इस बात पर निर्भर करेगी कि संघर्ष या विरोध का कारण क्या है ? और क्या उसे लोकल स्तर पर ही नहीं सुलझाया जा सकता? और क्या उस संघर्ष में कोई राजनीतिक पक्ष भासित हो रहा है? ऐसे अनेक प्रश्न हो सकते हैं उस संघर्ष के बारे में। ग्रामीण परिवेश के अनेक साधारण मसले बहुधा वहीं बैठ कर सुलझा लिए जाते हैं। लेकिन जब छोटे मसले भी राजनैतिक दृष्टि से इतना अधिक उलझा दिए जाते हैं कि उनका समाधान फिर स्थानीय स्तर पर करना असंभव हो जाता है।

राजनैतिक पार्टिओं ने देश का सामाजिक वातावरण कहीं अधिक दूषित और धूमिल कर दिया है जिससे ग्रामीण क्षेत्र हो या शहरी, समस्या का समाधान निकालना दूभर हो जाता है और उन्हें अनदेखा छोड़ने से उनकी व्यापकता विकराल हो जाती है फिर उठा जनता संसाधनों को नष्ट करने लगती है, जिससे आम जनता भी त्रश्त होती है और पुलिस का जमावड़ा संलग्न होने से व्यवस्था सुधरने के वजाय और अधिक जटिल बनती जाती है। अब तो हालात ऐसे हैं कि सरकार के हर काम में राजनितिक हस्तक्षेप होने लगा है।

विरोधी पार्टियां समाधान के पक्ष में कुछ कर पाने के वजाय अपने वक्तव्यों से स्तिथि को और जटिल बना देते हैं। देश के सबसे बड़े प्रदेश उत्तरप्रदेश जहाँ जनसँख्या भी सर्वाधिक और उसका घनत्व भी। ऐसा माहौल राजनैतिक पार्टिओं को खूब भाता है। जहाँ कभी-कभी ये पता नहीं चलता कि कौन और कितने पक्ष में हैं और कितने विपक्ष में ? लॉजिक की दृष्टि से भी समस्या को आंकना दुस्कर हो जाता है। इसी प्रदेश से इस लेख का जुमला निकला है। 'बटोगे तो कटोगे'। जहाँ मंदिर मस्जिद विवाद सदिओं तक चला और सर्वोच्च न्यायलय में न जाने योग्य मसले को भी सुप्रीम कोर्ट को हल करना पड़ा।

मैं समझता हूँ कि इस देश की जनता वाकई शांति पसंद है और जीवन में शांति ही चाहती है तो फिर ऐसे विवाद उत्पन्न होने ही नहीं चाहिए। जनता का कोई एक वर्ग किसी असंतोष के कारण यदि दो-तीन हाईवे भीड़ से जाम कर दें और महीनों तक आवागमन रुका रहे जनता को उससे कितनी ही परेशानी हो, सरकार लाचार होकर देखती रहती है। समस्या को सुलझाने के स्थान पर उलझाने वाले अधिक तर विरोधी पार्टिओं के होते हैं। मैंने आज तक नहीं देखा जब किसी विरोधी पार्टी की संलग्नता के कारण कोई समस्या का समाधान निकला हो? व्यवधान और विरोध ही कुछ लोगों का लक्ष्य रहता है। अतिरिक्त इसके बहुधा अपराध प्रवर्ति के कारण स्तिथि बिगड़ती ही है सुधरती नहीं। उपरोक्त जुमला मुसलमानों की बढ़ती जनसख्या और उससे उपजती समस्याओं के कारण उपजा है। नॉन मुस्लिम देश लगभग सभी अब इस प्रवर्ति को रोकने का प्रयास कर रहे हैं।

इतिहास साक्षी है कि मुसलमानों ने सदैव तलवार और अराजकता, से अन्य देशों पर अपना प्रभुत्व कायम किया। आज दुनिया में लगभग 57 देश मुस्लिम हैं और मुस्लिम धर्म को मानने वाले हैं। उनकी विस्तारवादी प्रवर्ति से अन्य धर्मालम्बी परेशान हैं। हिन्दुओं का केवल भारत देश ही है जो अशोक साम्राज्य के बाद बिघटित होता गया, रही-सही कसर आज़ादी के बाद बटवारे के फलस्वरूप बने पाकिस्तान और बांग्लादेश ने पूरी कर दी। बटवारे के समय धर्म के आधार पर मुस्लिमों को पाकिस्तान और बांग्लादेश दे दिए गए, जिससे भारत भूभाग काफी छोटा रह गया। इसके उपरांत भी गाँधी की मुस्लिम परस्त सोच ने बिना किसी विधान और राजनैतिक विचार व् कानून के एक बड़ी संख्या मुसलामानों की भारत में रोक ली गयी। किसी ने भी इस पर एतराज नहीं किया और न कहीं आंदोलन हुए। समय के साथ यही वर्ग कांग्रेस पार्टी का वोट बैंक बन गया। कांग्रेस और नेहरू जो कि पहले प्रधान मंत्री बने उन्होंने इस काम को अंजाम दिया। इस पर भी गाँधी को राष्ट्रपिता का ख़िताब देकर उनका चित्र भारत की करेंसी पर छापा जाने लगा जो आज भी हो रहा है।

लेखक का यहाँ यह प्रश्न है कि पाकिस्तान देश बनने पर जिन्ना तो पाकिस्तान के प्रधान मंत्री बने और डेमोक्रेसी को अलग छिड़कते हुए भारत में सुभाष बोस की जगह नेहरू को प्रधानमंत्री बना दिया गया। फिर भी तत्कालीन राजनीतिज्ञों का पेट नहीं भरा, और गाँधी को ह्यराष्ट्रिपता' और नेहरू को चाचा घोषित कर दिया । यह काम कितना मूर्खता का था कि गाँधी ने पाकिस्तान बनाया और बांग्लादेश, जबकि वे बटवारे के विरोधी कहे गए। सिद्धान्त: गाँधी पाकिस्तान और बांग्लादेश के राष्ट्रपिता होने चाहिये थे। भारत तो बहुत पहले से ही एक राष्ट्र मौजूद था, वहां दुबारा कोई पिता कैसे हो सकता है? इस पर भी बटवारे के समय तथाकथित शांति के पुजारी ने इतनी अशांति उत्पन्न कर दी कि पाकिस्तान और बांग्लादेश से विस्थापित हिन्दुओं की मुसलमानों ने मारकाट, बलात्कार महिलाओं के अंग भग कर भीमत्स नज़ारा उत्पन्न किया और वो दशा कर दी जो विश्व ने कभी देखी न होगी और न आगे कभी देख सकेंगे। रेल गाड़ियां गंभीर घायल, क्षत विक्षिप्त और मृतकों को लेकर भारत पहुंची थी।

वाह मेरी आज़ादी और शांति के पुजारी, तुझ पर बलि बलि जाऊं। इतिहास की पृष्टभूमि से सबक लेते हुए शीर्षक 'बटेंगे तो कटेंगे' का जुमला सोशल मीडिया और राजनैतिक गलियारों में प्रमुखता से प्रसिद्धि पा रहा है जो संज्ञान और शिक्षा लेने लिए उचित उदाहरण प्रस्तुत करता है। वैसे भी कोऑपरेशन का सिद्धांत मैंने पढ़ा था कि 'यूनियन इज़ स्ट्रेंथ' अथवा संघठन में ही शक्ति है। इसलिए जुमला का सर्वत्र प्रचार-प्रसार बहुत जरुरी है और उससे भी जरुरी संचार और प्रिंट मीडिया जो व्यक्तिगत न होकर समाज विशेष के हों सक्रीय होने चाहिए। आज़ादी और उसके उपरांत सभी मीडिया नपुंसक और बिकाऊ बन गए हैं, उन्हें जाग्रत नहीं किया जा सकता, दूसरी और इतिहास कार है जिन्होंने अपना फर्ज ईमानदारी से नहीं निभाया और अभी भी नहीं निभा रहे हैं। इसलिए समाज के विद्युत जन बीड़ा उठायें आज़ादी और उसके बाद के समय का वो इतिहास /घटनाएं/सरकारी निर्णय जिनसे जनता प्रभावित हुयी अथवा हो रही है को प्रभावी ढंग से लिपिबध्य किया जाय। इससे आगे की इस देश की पीढ़ी अपने पूर्वजों और उनके काल की सही स्तिथि पढ़ कर सही जानकारी कर सकें। ध्यान रहे यह काम सरकार का नहीं है यदि हम चाहते हैं कि घटनाओं का सही विवरण अगली पीढ़ी को पढ़ने को मिले तो समाज को यह पुण्य कार्य करना ही होगा अन्यथा भविष्य की पीढ़ियां अपने भूतकाल से बेखबर और अनजान ही बनी रहेंगी। अत: जुमला बटोगे तो कटोगे बहुत ही उपयुक्त है, जब दूसरे धर्म के अनुयायी एकजुट रह सकते हैं तो सनातनी समुदाय को क्या हिचक है?

भारत में मुसलमान आतंक मचाते हुए आये, दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान की वीरता से मोहम्द गोरी खौफ खाता था उसने दसिओं बार भारत पर आक्रमण किया परन्तु पृथ्वीराज चौहान से उसको शिकष्त ही मिली। और भी राजा उस समय देश में थे लेकिन एक कन्नौज का जयचंद जो उनका सम्बन्धी भी था, चौहान का धुर विरोधी होकर किसी ऐसी युति में संलग्न था जिससे पृथ्वीराज चौहान को शिकष्त दे सके। इसी योजना के तहत मोहम्द गोरी जयचंद से मिल कर पृथ्वीराज को मार पाया और देश में मुसलमानों का आवागमन सुगम होता चला गया और मुस्लिम बाबर से लेकर बहादुरशाह तक हिन्दुस्तान पर राज किया और अनेक अत्यचार किये।

अकबर के शासन में जयपुर घराने के तत्कालीन राजा मानसिंघ अकबर की सेना के सेनापति होते थे, लेकिन मेवाड़ के महाराणा प्रताप अकेले ऐसे हिन्दू राजा थे जिन्होंने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। यदि देश के तत्कालीन राजा उस समय एकजुट होकर आक्रांताओं का सामना करते तो देश में मुस्लिम और अंग्रेजी शासन कभी नहीं होता। इसलिए अपने-अपने समाज, देश और संस्कृति की सुरक्षा के लिए एकजुटता आवश्यक है। जिस दिन ऐसा हो जायेगा जयचंद लोग चुप बैठ जायेंगे और अन्य देशों के साथ मिल कर भारत को कमजोर करने वाले भी अलग-थलग होकर आम जनता से बहिस्कृत कर दिए जायेंगे। आकाश में जिस प्रकार अनगिनित तारे विचरण करते दीखते हैं सब अपनी-अपनी राह पर और निश्चित दूरी पर ही रहते हैं। ऐसे ही हम सभी एक साथ रहे, एक साथ काम करें और किसी से अनायास ही न भिड़ें। अंत में एकता में ही शक्ति निहित है याद रखे, कोई प्रलोभन आपको अपने उद्देश्य से डिगा न सके, देश को आपसे ऐसी ही आशा है।

–अतिथि लेखक,
प्रो. वीर बहादुर सिंह,
पूर्व कुलपति एवं खाद्य विज्ञ,
महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर।

ग्राइंडिंग मिनरल्स से निकलने वाली धूल ग्रामीणों के लिये आफत बनी

आसींद, (निसं.)। उपखंड क्षेत्र के बोरेला ग्राम पंचायत के अंतर्गत बाजुंदा मार्ग पर रघुनाथपुर की ढाणी के निवासियों का ग्राईडिंग मिनरल्स से निकलने वाली धूल से जीना दुश्वार हो रहा है।

ग्रामीणों ने बताया कि आबादी क्षेत्र में संचालित ग्राइंडिंग मिनरल की मिलें पिछले 30 वर्ष से संचालित है तथा इन ग्राइंडिंग मिनरल्स की मिलो में पत्थर पिसाई का कार्य किया जाता है। पत्थर पिसाई के दौरान निकलने वाला अपशिष्ट भी चारागाह भूमि में अस्त-व्यस्त तरीके से डाल रखा है जिससे ग्रामीणों के मवेशियों को विचरण करने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कई बार तो मवेशी इन सफेद पाउडर के दलदल में फंसकर अपने प्राण तक त्याग चुके हैं।

गांव के ही धर्मीचंद ने बताया कि उसकी एक चाय की होटल संचालित थी लेकिन इन मिनरल फैक्ट्री से निकलने वाले धूल के कारण आज बेरोजगार होकर घर पर कृषि कार्य करने को मजबूर हैं। आए दिन मिनरल

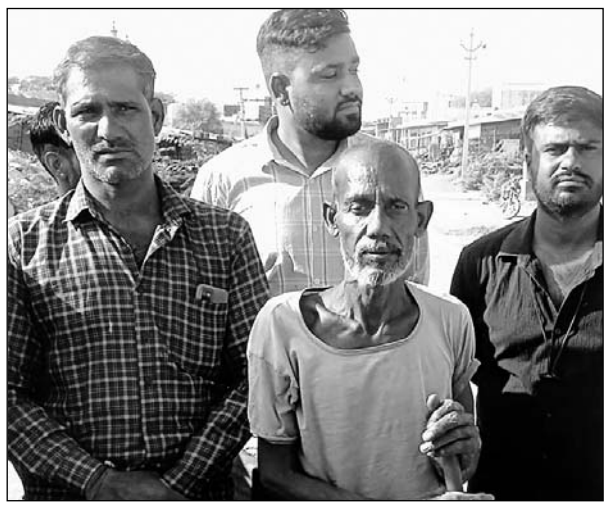

कई ग्रामीण सिलिकोसिस बीमारी से पीड़ित होकर अपने दुख की दास्तां बयां कर रहे हैं।

- **आबादी क्षेत्र में संचालित ग्राइंडिंग मिनरल की मिलें पिछले 30 वर्ष से संचालित है**
- **कस्बेवासियों को सिलिकोसिस नामक बीमारी होने का खतरा बना हुआ है**

फैक्ट्री से निकलने वाले धूल के गुबार के कारण आसपास के घरों में सफेद मिट्टी की चादर परतों के रूप में जम जाती है जिससे कस्बेवासियों को सिलिकोसिस नामक गंभीर बीमारी होने का खतरा बना हुआ है। पूर्व में भी गांव में पांच सिलिकोसिस के रोगी पाए गए हैं तथा यदि समस्या का निराकरण नहीं होता है तो वहां निवासरत परिवारों के सदस्यों को भी इस गंभीर बीमारी के होने का अंदेशा बना हुआ है। कई बार इन मिनरल्स संचालकों को ग्रामीणों के द्वारा समस्या के बारे में अवगत करवाने के बाद भी स्थिति जस की तस बनी हुई है तथा गांव के ही कुछ लोग जो इन मिनरल्स में काम करते हैं वह भी सिलिकोसिस बीमारी से पीड़ित होकर अपने दुख की दास्तां बयां कर रहे हैं। सिलिकोसिस नामक गंभीर बीमारी जिसकी पहचान दांत पीले और हड्डी जाम जो वहां पर ग्रामीणों में देखने को मिली।

कई ग्रामीणों का तो यहां तक आरोप है कि खेतों में फसल बुवाई के दौरान सफेद मिट्टी की समस्या का पुरजोर सामना करना पड़ता है। जिससे फसल खराबी की भी आशंका बनी रहती है।

साथ ही ग्रामीणों ने बताया कि प्रदूषण नियंत्रण मंडल के अधिकारी जांच के नाम पर केवल लीपापोती करके चले जाते हैं। ग्रामीणों की मांग है कि इन औद्योगिक क्षेत्र में चल रहे ग्राइंडिंग मिनरल्स फैक्ट्री से निकलने वाले धूल के गुबार को नियंत्रित करके फिल्टर युक्त मशीन से धूल को फैक्ट्री में ही संग्रहित किया जाए, जिससे कस्बे वासियों को सिलिकोसिस नामक गंभीर बीमारी होने से राहत मिल सके। ग्रामीणों के द्वारा जब फैक्ट्री संचालकों से धूल संबंधी समस्या के बारे में बात की गई तो फैक्ट्री संचालकों के द्वारा संतोषप्रद जवाब नहीं दिया गया जिससे कस्बेवासियों में रोष व्याप्त है। ग्रामीणों ने बताया कि यदि समस्या का समाधान नहीं होता है तो इस समस्या को लेकर आगामी दिनों में जिला कलेक्टर को अवगत करवाया जाएगा।

प्रदेश के 19 हजार उच्च माध्यमिक स्कूलों में व्याख्याता के 17 हजार से अधिक पद रिक्त

बीकानेर, (निसं)। प्रदेश के 19 हजार उच्च माध्यमिक स्कूलों में व्याख्याता के वर्तमान में 17 हजार से अधिक पद रिक्त चल रहे हैं। हालांकि रिक्त पदों को भरने के लिए लोक सेवा आयोग ने व्याख्याता पदों की भर्ती का विज्ञापन जारी कर दिया है।

आयोग की ओर से लेक्चरर के 24 विषयों में 2202 पदों पर भर्ती की जाएगी। जिसके लिए ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया अगले महीने 5 नवंबर से शुरू होगी। अभ्यर्थी 4 दिसंबर तक आवेदन कर सकेंगे। नई भर्ती में चयनित अभ्यर्थियों को लेक्चरर पदों पर नियुक्ति के बाद भी पद रिक्त रहेंगे। दरअसल, वर्तमान में रिक्त चल रहे पदों में से नई भर्ती से केवल 12 फीसदी पद ही भर पाएंगे। पिछले साल से सेकंड ग्रेड से व्याख्याता पदों पर प्रमोशन नहीं होने के कारण डीपीसी कोटे के 50 फीसदी पद रिक्त चल रहे हैं। हालांकि शिक्षा विभाग ने शिक्षा सत्र 2021-22 और 2022-23 की डीपीसी के प्रस्ताव आरपीएससी को भिजवाए दिए हैं। लेकिन आरपीएससी से फिलहाल डीपीसी का अनुमोदन प्राप्त नहीं हुआ है।

- **हालांकि रिक्त पदों को भरने के लिए लोक सेवा आयोग ने व्याख्याता पदों की भर्ती का विज्ञापन जारी कर दिया है, वर्तमान में रिक्त चल रहे पदों में से नई भर्ती से केवल 12 फीसदी पद ही भर पाएंगे**
- **पिछले साल से सेकंड ग्रेड से व्याख्याता पदों पर प्रमोशन नहीं होने से डीपीसी कोटे के 50 फीसदी पद रिक्त चल रहे हैं**

यदि दो साल की बकाया डीपीसी होती है तो करीब 10 हजार सेकंड ग्रेड शिक्षक व्याख्याता पदों पर पदोन्नत होंगे। ऐसे में नई भर्ती के साथ-साथ बकाया प्रमोशन होने पर ही राज्य के स्कूलों में व्याख्याताओं के सभी रिक्त पद भर पाएंगे। राज्य के 19 हजार उच्च माध्यमिक स्कूलों में व्याख्याता के लगभग 55 हजार पद स्वीकृत है।

जिसमें से 37 हजार पदों पर व्याख्याता वर्तमान में कार्यरत है। जबकि 17 पद रिक्त चल रहे हैं। दो महीने बाद 12 दिसंबर से अर्द्धवार्षिक परीक्षा शुरू होनी है। शिक्षक अगले महीने तक बकाया डीपीसी की मांग कर रहे हैं।

राशिफल

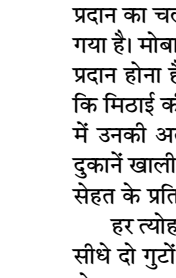

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 4 नवम्बर, 2024

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, अनुराधा नक्षत्र सोमवार प्रात: 8:04 तक, सौभाग्य योग दिन 11:39 तक, बालव करण प्रात: 9:14 तक, चन्द्रमा वृश्चिक राशि में संचार करेगा। **ग्रह स्थिति:** सूर्य-तुला, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। आज राजयोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति, भैरव दूज, यम द्वितीया, विश्वकर्मा दिवस, चित्रगुप्त पूजा, कलम दवात पूजा (बिहार) है। **श्रेष्ठ चौघड़िया:** चर 8:04 से 9:26 तक, लाभ-अमृत 9:26 से 12:10 तक, शुभ 1:32 से 2:55 तक। **राहूकाल:** 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:42, सूर्यास्त 5:39

मेष

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। आज नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

वृष

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी।

मिथुन

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आवश्यक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

कर्क

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

सिंह

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। आज खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कन्या

आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

तुला

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

वृश्चिक

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आवश्यक कार्य के लिए यात्रा संभव है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु

परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

मकर

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कुंभ

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है।